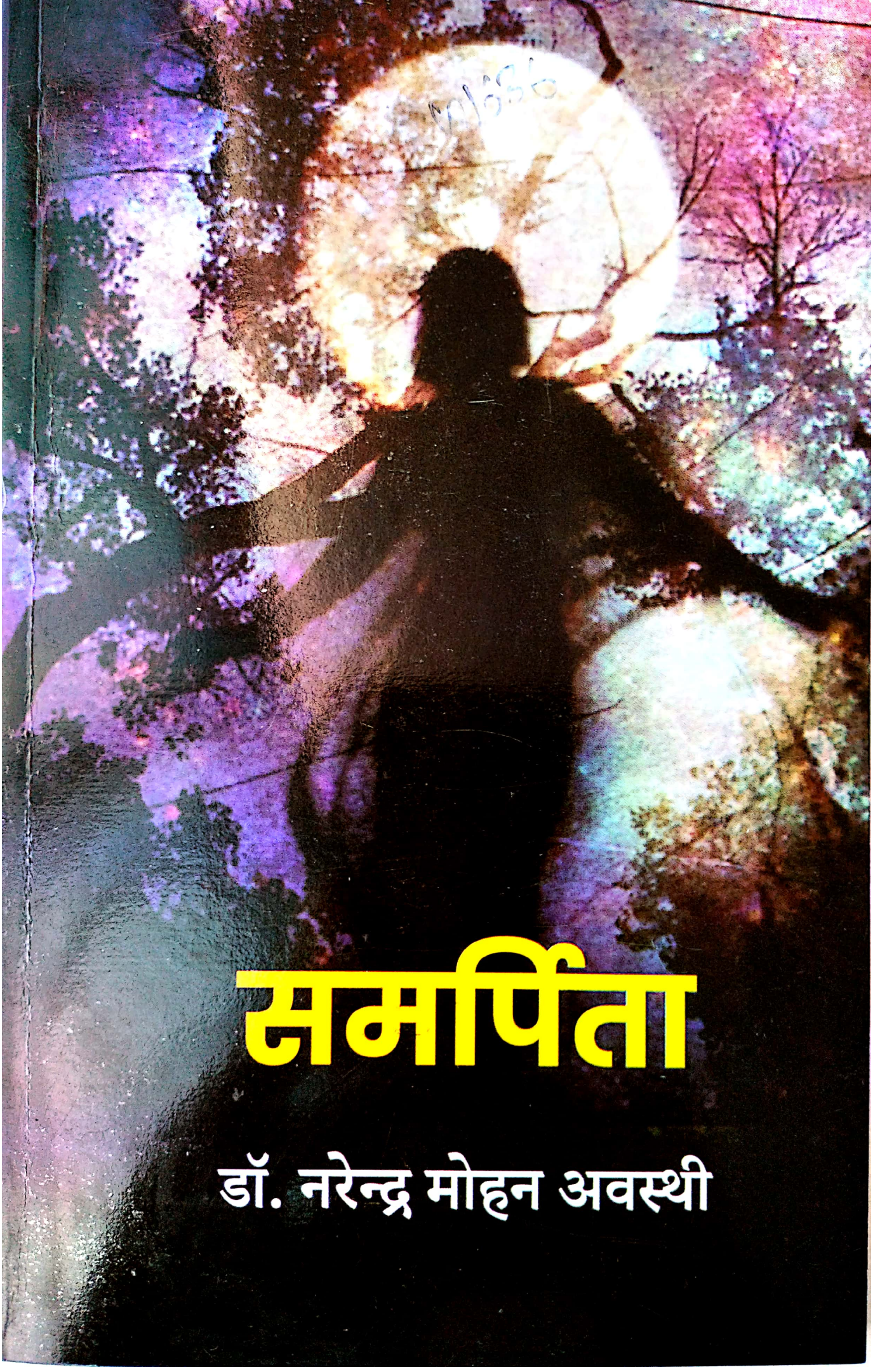

Scanned with OKEN Scanner

41686

डॉ. नरेन्द्र मोहन अवस्थी

समर्पिता

(कहानी-संग्रह)

साहित्य रत्नाकर
कानपुर

Scanned with OKEN Scanner

नोट : इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। लेखक एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के
बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा
मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनःप्रयोग की प्रणाली द्वारा,
किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

I.S.B.N. : 978-93-86784-24-7

पुस्तक	:	**समर्पिता** (कहानी-संग्रह)
लेखक	:	**डॉ. नरेन्द्र मोहन अवस्थी**
प्रकाशक	:	**साहित्य रत्नाकर** 'रामालय' म.न. 15, प्रथम तल, सिद्धार्थ नगर, गूबा गार्डेन, कल्याणपुर कानपुर-208 016 (उ. प्र.) मो. : 08960421760, 07905004033
संस्करण	:	प्रथम, सन् **2019**
मूल्य	:	₹ 175.00 मात्र
सर्वाधिकार	:	महेन्द्र भीष्म
मुद्रक	:	साक्षी आर्फसेट, यशोदानगर, कानपुर
शब्द सज्जा	:	अम्बुज ग्राफिक्स, आर. के. नगर, कानपुर

SAMARPITA (Kahani-Sangrah)
by – *Dr. Narendra Mohan Awasthi*
Price : Rs. One Hundred Seventy Five Only

U1636

पूज्य पिताश्री

पण्डित श्री महेश प्रसाद अवस्थी

व

माँ श्रीमती सुमित्रा देवी अवस्थी

को

Scanned with OKEN Scanner

11636

समर्पिता

कोई भी लेखक यह कहकर पल्ला नहीं झाड़ सकता कि उसकी कहानी उससे कहीं से भी सम्बद्ध नहीं है और उसने यह कहानी परकाया प्रवेश की तरह लिखी है। वस्तुत: कहानी लेखक के भोगे यथार्थ को चित्रित करती है भले ही परकाया प्रवेश का छद्म नाम देकर स्वयं को मुक्त करा ले जाने की हजार दलीलें उसके पास क्यों न हो।

कहानी संग्रह 'समर्पिता' के लेखक डॉ. नरेन्द्र मोहन अवस्थी शिक्षण क्षेत्र से हैं और पी.जी. कॉलेज के प्राचार्य पद तक रहे हैं। अत: आपका जीवनानुभव भी व्यापक रहा है।

आपकी कहानी प्रकृतिवादी तो है पर शुक्र है रोमानी लेखन वे नहीं करते हैं। जहाँ अश्लीलता के दर्शन (कुछ) पाठक ढूंढता है वहाँ वह यथार्थ से टकराता है। कहानी में सबरंग मौजूद हैं। गागर में सागर की तरह।

लेखक अपने खुले नेत्र, संवेदनशील हृदय और लेखनी से अपनी कहानियों में स्मरणीयता के साथ-साथ पठनीयता जैसे गुणों को जन्म देकर हिंदी-जगत के सुधी पाठकों को बरबस अपनी ओर आकर्षित करने में सफल है।

डॉ. नरेन्द्र मोहन अवस्थी की यह कहानियाँ किसी बड़े साहित्यकार की प्रशंसा की मोहताज नहीं हैं। वह स्वयं को पढ़ा ले जाने का माद्दा रखती हैं। कहानियों की पठनीयता, रोचकता के साथ एक प्रश्नचिह्न छोड़ती हैं, एक नई दिशा दिखाती हैं और साहित्य के उद्देश्य को पूर्ण करती हैं।

- महेन्द्र भीष्म

मोबा. : 8004905043

Scanned with OKEN Scanner

1636

अनुक्रमणिका

- मैंने किया शृंगार 11
- हदीस हयात में 16
- वैविध्य 22
- निष्कर्ष 28
- बचपन के चार मित्र 32
- संवरण 40
- नोवा (निषाद) की नाव 47
- पंडित जी 53
- समर्पण 58
- अधिनूतन अप्सरा 61
- भविष्य का भय 65
- समय को समर्पित 68
- समरपित हो मराज 73
- मोतिया गये मुम्बई 80
- समर्पिता 84
- प्रबन्धन 88
- प्रेरणा 93
- एक साथ 96
- गुलमा हुआ गुलाब 99
- जबरा झेली 104
- तीर्थ यात्रा 109

Scanned with OKEN Scanner

प्राक्कथन

कहानी, कला के माध्यम से शाश्वत सत्यों, सिद्धांतों और श्रेयों को युगानुरूप कथा के प्रवाह में प्रेम बना व्यंजित किया गया है। मानस, कुरान, बाइबिल, भक्ताम्बर, गुरुग्रंथ जैसे श्रेष्ठतम को भी पढ़ने का वर्तमान के पास समय नहीं है। अत: साहित्य एवं संसार सागर से प्राप्त मोतियों को सत्य और प्रेम से शृंगारित किया गया है ताकि नियम, न्यास और निष्पक्षता के साथ निष्पत्तियों को नई पीढ़ी तक पहुंचाया जा सके।

माण्डू के महल में एक शिलालेख पर अरबी में एक शिल्पकार ने लिखा है –

"मैंने अपनी तमाम जिन्दगी ईंट, पानी में इस उम्मीद में गला दी कि कभी कोई कद्र दां यहां आयेगा यदि उसको तनिक भी सुकून मिला तो मेरे पसीने को हवा लगेगी।

– डॉ. नरेन्द्र मोहन अवस्थी
(सेवा निवृत्त प्राचार्य)
47 होमरेसीडेन्सी, टीकमगढ़,
(म.प्र.) – 472001
मोबा. : 6266922779

Scanned with OKEN Scanner

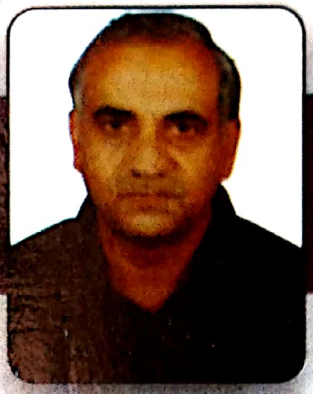

डॉ. नरेन्द्र मोहन अवस्थी ने भूगोल विषय के अंतर्गत "सिंचित कृषि का ग्रामीण विकास पर प्रभाव" पर अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा से पीएच.डी. की उपाधि अर्जित की थी। प्राध्यापक भूगोल पद पर कार्यरत रहते हुए आपने स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की पर्यावरण, संसाधन, भौतिक भूगोल संबंधी 18 पुस्तकों का सृजन किया। इन कृतियों के लेखन के फलस्वरूप मध्यप्रदेश उच्च शिक्षा विभाग, भोपाल द्वारा आपको वर्ष 2011 ई. में इक्यावन हजार रुपया धनराशि के शंकरदयाल शर्मा सृजन सम्मान से सम्मानित किया गया था। श्रेष्ठ शिक्षण कार्य हेतु आपको आदिम जाति कल्याण विभाग म.प्र. भोपाल द्वारा श्रेष्ठतम अध्यापन हेतु सम्मानित किया गया। अध्यापन कार्य के साथ एन.सी.सी. अधिकारी के कार्य संपादन हेतु आपको श्रेष्ठ कर्तव्य निर्वहन हेतु भी सम्मानित किया गया।

ऐसे बहुप्रतिभा के धनी डॉ. अवस्थी शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय टीकमगढ़ के प्राचार्य पद से सेवानिवृत्ति पश्चात् वर्तमान समय में संत रामदास स्नातकोत्तर महाविद्यालय टीकमगढ़ के प्राचार्य पद पर कार्यरत हैं। सेवानिवृत्ति के पश्चात् आपकी लेखनी की दिशा, अध्यात्म, दर्शन, धर्मतत्व आदि विषयों में अग्रसर हुई है। आपका कहानी संग्रह "पुण्यफल" प्रकाशित होते ही जन चर्चा का विषय बन चुकी है। आप कथाओं के माध्यम से सनातन सिद्धांतों और सत्यों को संक्षेप में व्यक्त करने के लिए लघुतम कथाओं के सृजन में व्यस्त हैं।

साहित्य रत्नाकर

'रमालय', म.न. 15, प्रथम तल, सिद्धार्थ नगर,
गूबा गार्डेन, कल्याणपुर, कानपुर-208016, (उ.प्र.)

Mob: 08960421760, 09044344050
Email: sahityaratnakar@yahoo.co.in

₹ 175/-

ISBN : 978-93-86784-24-7

Scanned with OKEN Scanner